CHAPTER 6

(क) वसंत आया

(ख) तोड़ो

PAGE 38, प्रश्न और अभ्यास

(क) वसंत आया

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:1

वसंत आगमन की सूचना कवि को कैसे मिली?

उत्तर - कवि को प्रकृति में आये परिवर्तनों जैसे चिड़ियों के कूक,पेड़ो से गिरे पीले पत्ते तथा गुनगुनी ताज़ी हवा को देखकर बसंत आने की सुचना मिली। कवि अपने घर पहुँच कर उन्होंने ने कैलेंडर देखकर अपने जानकारी की पुष्टि की।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:2

'कोई छः बजे सुबह.......फिरकी सी आई, चली गई'- पंक्ति में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कवि का तात्पर्य है कि बसंत आने से पहले वातावरण की हवा ठंडी होती है जो मनुष्यों को ठिठुरा देती है। परन्तु जब बसंत आता है तो हवा गुनगुना हो जाती है। ये गुनगुनी हवा गोल-गोल घूमती है और अचानक से रुक जाती है। बसंत की हवा में उपस्थित गर्माहट आनंदित करती है।

PAGE 39

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:3

अलंकार बताइए:

(क) बड़े-बड़े पियराए पत्ते

(ख) कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो

(ग) खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई

(घ) कि दहर-दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल

उत्तर -

(क) बड़े -बड़े पियराए पत्ते -प्रस्तुत पंक्ति में 'ब' तथा 'प' वर्णन की दो से अधिक बार आवृति के कारण अनुप्रास अलंकार है तथा 'बड़े' शब्द की उसी रूप में पुनः आवृति के कारण पुनरक्ति प्रकाश अलंकार है ।

(ख) कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो इस पंक्ति में मानवीकरण अलंकार है ।

(ग) खिली हुई हवा आई ,फिरकी सी आई ,चली गयी - इस पंक्ति में हवा की तुलना फिरकी से की गयी है ।अतः यहाँ उपमा अलंकार है ।इसी के साथ इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार भी है क्योंकि "ह' वर्ण की आवृति बार बार हुई है ।

(घ) की दहर-दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल - प्रस्तुत पंक्ति में 'द' वर्ण की दो से अधिक बार आवृति के कारण अनुप्रास अलंकार है तथा 'दहर' शब्द की उसी रूप में पुनः आवृति के कारण पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:4

किन पंक्तियों से ज्ञात होता है कि आज मनुष्य प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य की अनुभूति से वंचित है?

उत्तर - नीचे दी गयी पंक्तियों से ज्ञात होता है कि आज मनुष्य प्रकृति की अनुभूति से वंचित है :

कल मैंने जाना की बसंत आया ।

अनुभूति से वंचित है ।

कल मैंने जाना कि वसंत आया ।

और यह कैलेंडर से मालुम था

अमुक दिन अमुक बार मदनमहीने की होवेगी पंचमी

दफ्तर में छुटटी थी -यह था प्रमाण

और कवितायें पढ़ते रहने से यह पता था

कि दहर -दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल

आम बौर आवेंगे

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:5

'प्रकृति मनुष्य की सहचरी है' इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुए आज के संदर्भ में इस कथन की वास्तविकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - यह सच है कि 'प्रकृति मनुष्य की सहचरी है'। जब से इस धरती पर इंसानों का अस्तित्व पैदा हुआ है। प्रकृति ने

अपने साथी की तरह उसे आगे बढ़ाया है। उन्होंने मनुष्य की सभी सुख-सुविधाओं और पृथ्वी पर उसके अस्तित्व का ध्यान रखा और पनपने के लिए सभी साधन दिए हैं। मनुष्य ने पृष्ठभूमि की गोद में रहकर ज्ञान प्राप्त किया है। आज वह चाँद पर पहुँच गया है। उसके पास सबसे उन्नत साधन उपलब्ध हैं। आदमी के पास अपना कुछ भी नहीं है। उसे जो मिला है, वह उसी प्रकृति में है जो साथी के रूप में है। लेकिन जब से मनुष्य ने धरती पर अपने पैर जमाए, उसने अपना साम्राज्य शुरू कर दिया है। उसने अपने चारों ओर सीमेंट के जंगल खड़े कर दिए हैं, जिसके कारण उसके साथी उसके पास सीमित हो गए हैं। आज प्रकृति ने भी अपने साथी रूप को छोड़ दिया है और एक शातिर रूप ले लिया है।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:6

'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है? उसका प्रतिपाद्‌य लिखिए?

उत्तर - प्रकृति के साथ आज का मानवीय रिश्ता टूट गया है। मनुष्य ने देश की प्रगति के लिए प्रकृति को बहुत नुकसान

पहुंचाया है। महानगर में प्रकृति का दर्शन नहीं है। चारों तरफ इमारतें हैं। मनुष्य को ऋतुओं की सुंदरता और उसमें होने वाले परिवर्तनों के बारे में जानकारी नहीं है। यह कवि के लिए चिंता का विषय है। प्रकृति जो कभी उसका साथी था आज उससे दूर है। मनुष्य के पास अत्याधुनिक सुविधाएँ होने का साधन है। लेकिन प्रकृति की सुंदरता को देखने और महसूस करने की संवेदना नहीं बची है।

(ख) तोड़ो

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:1

'पत्थर' और 'चट्टान' शब्द किसके प्रतीक हैं?

उत्तर - पत्थर और चट्टान शब्द प्रयोग इस कविता में बंधन तथा बाधाओं के प्रतीक के रूप में किया हैं। कवि मनुष्य को उन्हें हटाने के लिए प्रेरित करता है क्योँकि बंधन और बाधाएँ मनुष्य को आगे बढ़ने से रोकती हैं। कवि के अनुसार यदि इन बंधनो को पार करके विकास करना है और मजिल को पाना है तो इन्हे तोडना होगा।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:2

भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो

उत्तर - इस पंक्ति का भाव यह है की मिट्टी और मनुष्य का मन एक जैसे होते है। अगर मिट्टी में उपजाऊपन नहीं है तो वह किसी भी बीज का पोषण नहीं कर पायेगी। उसी प्रकार मन अगर स्वस्थ नहीं है तो उसकी सृजन शक्ति प्रभावित होगी। मन तब स्वस्थ होगा जब उसके अंदर की खीज बहार निकलेगी। इस पंक्ति में कवि मिट्टी की तरह मन को उपजाऊ बनाने के लिए प्रेरित करते है।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:3

कविता का आरंभ 'तोड़ो तोड़ो तोड़ो' से हुआ है और अंत 'गोड़ो गोड़ो गोड़ो' से। विचार कीजिए कि कवि ने ऐसा क्यों किया?

उत्तर - कविता का आरम्भ 'तोड़ो तोड़ो तोड़ो' से करके कवि ने मनुष्य को विघ्न, खीज तथा बाधाएं इत्यादि को तोड़कर कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। इन सबको तोड़ने के बाद ही मनुष्य के अंदर सृजन शक्ति का विकास होता है। मनुष्य के सोचने और समझने की शक्ति का विकास होता है। विघ्न, खीज तथा बाधाएं मनुष्य के सृजन शक्ति तथा विचारों को प्रभावित करती है। 'गोड़ो गोड़ो गोड़ो' शब्द का प्रयोग आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के उद्देशय से किया गया है।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:4

ये झूठे बंधन टूटें
तो धरती को हम जानें

यहाँ पर झूठे बंधनों और धरती को जानने से क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर - कवि की निम्नलिखित पंक्ति में, झूठे बंधन का अर्थ है कि झूठे बंधन मनुष्य को उसके रास्ते से विचलित करते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी में पत्थर और चट्टानें उसे बंजर बनाती

हैं। उसी प्रकार उसके मन में भी व्याप्त झूठे बंधन उसकी सृजन शक्ति को विकसित न होने देते है।

पृथ्वी को जानने से तात्पर्य यह है कि पृथ्वी में पुरे संसार का पोषण करने की शक्ति है। लेकिन इसमें मौजूद पत्थर और चट्टानें इसे बंजर बना देती हैं। मनुष्य का मन इस पृथ्वी की तरह है, यदि वह संदेह, झूठे बंधन के जाल में फंस जाता है, तो वह अपनी सृजन शक्ति को खो देता है। अतः मनुष्य को आत्मावलोकन करके अपनी सृजन शक्ति का विकास करना चाहिए।

12:1:6:प्रश्न और अभ्यास:5

'आधे-आधे गाने' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - 'आधे-आधे गाने' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उनके द्वारा लिखा गया गीत अभी अधूरा है। यह गीत तब पूरा होगा जब मनुष्य अपने अंदर की खीज और ऊब को बहार निकल कर अपने मन को उमंग और उल्लास से नहीं भर लेता है।